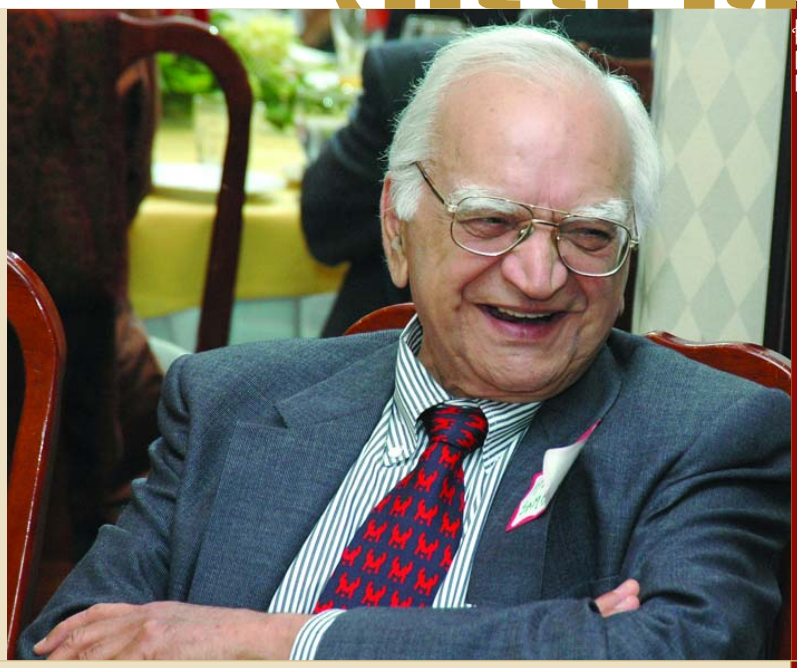

एम. एल. सरीन

डॉ. मोहिंदर पी. सांभी

पत्नी की याद में संगीत पीठ

वेवांद

अगर संगीत प्रेम का सेतु है तो डॉ. मोहिंदर पी. सांभी आज भी इसे रच रहे हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिलीस के डिपार्टमेंट ऑफ एथनॉम्यूजिकॉलॉजी में मोहिंदर (मिन्नो) बरार सांभी भारतीय संगीत पीठ के लिए दस लाख डॉलर की स्थायी निधि की स्थापना करवाई है। इसके तहत एक पूर्णकालिक, स्थायी प्रोफेसर की नियुक्ति की जा रही है। लुधियाना में जन्मे हाइपरटेंशन के इस विशेषज्ञ ने भारतीय और अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हुए जीवन बिताया। अक्टूबर में उन्होंने अपनी पत्नी मिन्नो के संगीत प्रेम की स्मृति को स्थायी बनाने के लिए स्थायी निधि बनाई। डॉ. सांभी का यह उपहार संगीत के ताजमहल की तरह है और इससे भावी पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती रहेगी।

डॉ. सांभी 1971 से 1994 तक यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में प्रोफेसर रहे। जून में उन्होंने इस संस्थान को पांच लाख डॉलर भेंट किए। बाकी पांच लाख डॉलर उनकी जायदाद से मिलेंगे। तब तक वह प्रशासनिक खर्च के लिए इस राशि के ब्याज के रूप में मिल रहे पच्चीस हजार डॉलर हर वर्ष संस्थान को देंगे। विश्वविद्यालय को आशा है कि अगले साल की शुरूआत में भारतीय संगीत पीठ के प्रोफेसर की नियुक्ति हो जाएगी।

सांभी पीठ का उद्देश्य किसी विशिष्ट संकाय सदस्य की अध्यापन और शोध गतिविधियों को आर्थिक सहयोग देना है। डॉ. सांभी कहते हैं, ''मुझे इस बात से बहुत संतोष मिला है कि मैं अपनी पत्नी की स्मृति को इस प्रकार सम्मानित कर पाया। इससे यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में भारतीय संगीत का अध्ययन सुनिश्चित हो सकेगा। मिन्नो को संगीत से गहरा प्रेम था। वह बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञ थीं और खासतौर पर बच्चों के इलाज में संगीत की भूमिका को बहुत प्रभावी मानती थीं।''

सांभी दंपत्ति के प्रेम के अंकुर भले ही भारत की मिट्टी में फूटे हों लेकिन उनका दांपत्य अमेरिका में पुष्पित-पल्लवित हुआ। वर्ष 1951 में दिल्ली के लेडी हार्डिंग कॉलेज में पढ़ाते हुए मोहिंदर सांभी की मुलाकात अपनी छात्रा और भावी जीवन संगिनी मिन्नो से हुई। 1953 में अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध उन्होंने मिन्नो से विवाह कर लिया और न्यूयॉर्क पहुंच कर उन्हें शादी की खबर दी।

डॉ. सांभी याद करते हैं, ''मैं क्लीवलैंड, ओहायो में इंटर्न के तौर पर काम करने लगा। मेरी तनख्वाह हम दोनों के गुजारे के लिए पूरी नहीं होती थी।'' लेकिन कम तनख्वाह के बावजूद वह पढ़ाना चाहते थे। ''अगले चार साल मैं पोस्टग्रेजुएट रिसर्च फेलो के तौर पर काम करता रहा और हाइपरटेंशन में विशेषज्ञता पाई। मेरी पत्नी ने बाल मनोविज्ञानी का प्रशिक्षण लिया। उसका वेतन हमेशा मुझसे ज्यादा रहा और उसने मेरे शोध को प्रोत्साहित किया।''

1958 में प्रशिक्षण पूरा होने पर मोहिंदर सांभी को उनके परामर्शक ने निजी प्रैक्टिस में अपने साथ जुड़ने के लिए एक लाख डॉलर सालाना की पेशकश की। लेकिन मिन्नो ने उनसे कहा, ''मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं। तुम भले ही कभी प्रोफेसर न बन पाओ लेकिन उसके लिए पूरी कोशिश किए बिना तुम्हें चैन नहीं पड़ सकता। मुझे संपन्न पति नहीं, सुखी और संतुष्ट पति चाहिए।''

मोहिंदर सांभी प्रोफेसर बन गए और उन लोगों को पैसे की दिक्कत भी नहीं रही। साभी दंपत्ति समझदारी से मकानों में पैसा लगाते और उन्हें बेचते रहे। इस क्रम में उन्होंने जो पैसा बचाया, उसे ही आज वह खुले दिल से बांट रहे हैं। 1961 से 1971 तक वह यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया मेडिकल स्कूल में पढ़ाते रहे, फिर यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में चले गए जहां वह हाइपरटेंशन विभाग के प्रमुख और अंततः सम्मानित प्रोफेसर बने।

डॉ. सांभी कहते हैं, ''हमारी तन्ख्वाह बस बढ़िया ढंग से जी पाने को ही काफी थी। हमें घूमने और बेहतरीन मदिराओं कर शौक था। मेरे छात्रों को मेरे साथ पढ़ने की अपनी बारी का इंतजार रहता कि कुछ बढ़िया मदिरा पीने को मिलेगी। मिन्नो के जाने के बाद मैंने अपने मयखाने की ज्यादातर सामग्री बेच दी।''

मिन्नो का निधन 2004 में हुआ लेकिन अपने कई लोकोपकारी अभियानों के माध्यम से वह अपने दांपत्य की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। जनवरी में उन्होंने थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों के लिए चंडीगढ़ में मिन्नो सांभी निःशुल्क ब्लड ट्रांसफ्यूजन कार्यक्रम के लिए एक लाख पैंतीस हजार डॉलर देने का संकल्प किया। उनकी जायदाद से पी.जी.आई. के ब्लड बैंक को लगातार आर्थिक सहायता मिलती रहेगी।

सांभी बताते हैं, ''मुझे सब से ज्यादा दुख यह सोच कर होता है कि काश मैंने मिन्नो से पहले ही यह पूछा होता कि उसे जिन्दगी में क्या कमी खलती है। मैंने उससे जब पूछा तो उसने कहा कि दो बच्चे भी हुए होते तो अच्छा रहता। लेकिन तक तक बहुत देर हो चुकी थी।'' □

वेवांद स्वतंत्र पत्रकार हैं और नई दिल्ली में रहते हैं।